झारखण्ड़ की राजनीति में क्षेत्रिय दलों की भूमिका

लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में दलीय व्यवस्था आवश्यक है, जिसमें क्षेत्रीय दलों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि ये दल ही क्षेत्रीय मुद्दों को जोर-शोर से उठाते है और पूरे देश का ध्यान आक्रर्षित कर उसके निर्वारण के लिए प्रयासरत रहते है। भारत में क्षेत्रीय दलों का इतिहास बहुत पुराना है भारत की विविधता क्षेत्रीय दलों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। पंजाब, कश्मीर, तमिलनाडु में क्रमशः अकालीदल, मुस्लिम कॉन्फ्रेंस जस्टिस पार्टी का गठन हुआ जो अपनी अलग पहचान रखती थी। भारत एक लोकतांत्रिक देश है जिसकी व्यवस्था जनता के द्वारा जनता के हित में बनाया जाता है।

भारत में संघीय शासन में संघ के द्वारा जो नीतियां और कार्यक्रम बनाए जाते हैं वो राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखकर बनाया जाता है। जिसके कारण क्षेत्रीय समस्याएं या तो उपेक्षित रह जाती हैं या उस पर कम ध्यान दिया जाता है। जिसके परिणामस्वरूप क्षेत्रीय दलों का उदय होता है। यही कारण है कि भारत में लगभग सभी प्रांतों में क्षेत्रीय दल देखने को मिलता है। कुछ प्रांतों में क्षेत्रीय दल इतने मजबूत स्थिति में है जिसके सामने राष्ट्रीय दलों का कोई वर्चस्व नहीं है। बी. एल. फाडिया अपनी पुस्तक में 'भारतीय राजव्यवस्था और संविधान' में लिखते हैं- ''राज्यस्तरीय अथवा क्षेत्रीय दलों का अर्थ उस राजनीतिक दल से लगाया जा सकता है। जिसका प्रभाव किसी विशेष राज्य तक सीमित है। उन दलों का दृष्टिकोण राष्ट्रहित में गौण तथा राज्य क्षेत्रीय हित में अधिक होता है। लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में क्षेत्रीय दलों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि यह दल न तो केवल क्षेत्रीय मुद्दों की तरफ ध्यान आकर्षित करती है बल्कि उसके समाधान के लिए प्रयासरत भी होती है। भारत में बहुदलीय व्यवस्था अपनाई गई है जिसके कारण कई क्षेत्रीय दलों का उदय हुआ है। राष्ट्रीय दल की संख्या कभी छः तो कभी सात रही, लेकिन क्षेत्रीय दलों की संख्या में बेहतासा वृद्धि होती रही हैं।

झारखंड के राजनीतिक में क्षेत्रीय दलों का प्रभुत्व शुरू से रहा है। यहां अधिकांश निर्वाचन क्षेत्रों से क्षेत्रीय एवं पंजीकृत दलों के उम्मीदवार विजयी होते रहे हैं, जिसके कारण कोई स्थिर सरकार नहीं बन पाई। झारखंड गठन के 15 वर्षों में 10 मुख्यमंत्री बने, जिसके कारण विकास की प्रक्रिया उस गति से नहीं बढ़ पायी जिस गति से बढ़ना चाहिए, झारखंड गठन के बाद भी क्षेत्रीय दलों का विकास हुआ जो यहां की संसदीय राजनीति को प्रभावित करती है। झारखंड गठन के बाद सन 2000 ई. 2022 ईस्वी तक की जितनी भी सरकारें बनी है। उन सरकारों में क्षेत्रीय दलों का प्रभाव देखा गया। झारखंड के मुख्य क्षेत्रीय एवं पंजीकृत दलों में झारखंड मुक्ति मोर्चा, ऑल झारखंड स्टूडेंट्स यूनियन (आजसू), झारखंड विकास मोर्चा (प्रजातांत्रिक), जनता दल यूनाइटेड, राष्ट्रीय जनता दल, मार्क्सवादी समन्वय समिति,नवजावन संघर्ष मोर्चा, जय भारत समानता पार्टी, झारखंड दिमोश पार्टी, झारखंड पार्टी (नरेन) झारखंड पीपुल्स पार्टी, जनता पार्टी, झारखंड वनांचल कांग्रेस सदान विकास पार्टी लोक जनशक्ति पार्टी, आदि पार्टियों है जो झारखंड की संसदीय राजनीति की दशा और दिशा तय कर रही हैं। इसके अलावा अन्य राज्यों के क्षेत्रीय दलों ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक, ऑल इंडिया तृणमूल कांग्रेस, जनता दल सर्कुलर राष्ट्रीय लोकदल समाजवादी पार्टी भी झारखंड की संसदीय राजनीतिक में अपना प्रभाव रखती हैं।

झारखंड गठन के साथ ही पहली सरकार गठबंधन सरकार थी जिसमें राष्ट्रीय दल भारतीय जनता पार्टी के 33 विधायकों के साथ क्षेत्रीय एवं पंजीकृत दल समता पार्टी के 5 विधायक, जनता दल के 3 विधायक, आजसू

समर्पित गोमांतवादी डेमोक्रेटिक पार्टी के 2 विधायक, झारखंड वनांचल कांग्रेस के 2 विधायक, के सहयोग सरकार बनी थी। झारखंड के संसदीय राजनीति का इतिहास रहा है कि यहां अभी तक जितनी भी सरकारें बनी वह गठबंधन सरकार थी। इस गठबंधन सरकार में क्षेत्रीय दलों का ही प्रभुत्व रहा है। क्षेत्रीय दलों ने अपनी इच्छा से सरकार चलाने एवं गिराने की भूमिका में देखा गया। झारखंड की सांस्कृतिक एवं जातीय बहुलता के कारण राष्ट्रीय दलों के अलावा कई क्षेत्रीय दलों का उदय हुआ। ये दल झारखंड की राजनीति को प्रभावित करती हैं यही कारण है कि गठन के 22 वर्ष पूरा होने के साथ 11 मुख्यमंत्री देखने को मिले। 2005 ईस्वी में झारखंड गठन के बाद पहली बार विधानसभा चुनाव हुए। इस चुनाव भारतीय जनता पार्टी 30 सीटें, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 9 सीटें, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी 1 सीट जीती। वहीं क्षेत्रीय दलों में झारखंड मुक्ति मोर्चा के 17 सीटें जीती। जनता दल यूनाइटेड 6 सीटें, राष्ट्रीय जनता दल 7 सीटें, भाकपा माले 1 सीट, ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक 2 सीट, यूनाइटेड गोमांतक डेमोक्रेटिक पार्टी 2 सीट जीतकर क्षेत्रीय दलों का महत्व झारखंड की राजनीतिक में बढ़ा दी। भारतीय जनता पार्टी सबसे बड़ी पार्टी बनकर भी सरकार का गठन नहीं कर पायी और शिबू सोरेन के नेतृत्व में क्षेत्रीय दलों की सरकार बनी। यह सरकार भी अपनी कार्यकाल पूरा नहीं कर सकी और मात्र 10 दिनों में आपसी मतभेद के कारण गिर गयी। पुनः अर्जुन मुंडा के नेतृत्व में क्षेत्रीय दलों के सहयोग से सरकार का गठन किया गया क्षेत्रीय दलों का प्रभाव ही था कि अर्जुन मुंडा सरकार भी मात्र 6 माह 7 दिन में गिर गयी और भारत के संसदीय इतिहास में दूसरी बार किसी राज्य में निर्दलीय सदस्य को मुख्यमंत्री बनाया गया। मधु कोड़ा (निर्दलीय) ने कांग्रेस एवं अन्य क्षेत्रीय दलों के सहयोग से नई सरकार के गठन की, लेकिन मधु कोड़ा सरकार ने भी अपना कार्यकाल नहीं किया। झामुमो के समर्थन वापसी के कारण अगस्त 2008 ईस्वी को इसकी सरकार गिर गयी। पुनः शिबू सोरेन के नेतृत्व में 27 अगस्त 2008 ईस्वी को एक नई सरकार का गठन किया गया जो 18 जनवरी 2009 ईस्वी को गिर गई और राज्य में पहली बार राष्ट्रपति शासन लागू किया गया। राष्ट्रपति शासन के समय ही 2009 ईस्वी में राज्य में विधानसभा के चुनाव हुए इस चुनाव में भी क्षेत्रीय दलों के प्रभाव को देखा जा सकता है। झारखंड मुक्ति मोर्चा ने 18 सीटें, आजसू 5 सीटें, भाकपा माले 1 सीट, जय भारत समानता पार्टी 1 सीट, जदयू 2 सीट, झारखंड विकास मोर्चा 11 सीट, राष्ट्रीय जनता दल 5 सीट, जीती। 2009 ईस्वी के चुनाव परिणाम ने झारखंड के संसदीय राजनीतिक में क्षेत्रीय दलों की महत्व को बढ़ा दिया।

इन क्षेत्रीय एवं पंजीकृत दलों ने कुल सीटों का 58 प्रतिशत सीटों पर विजय हासिल की और झारखंड की राजनीति को अपने नीतियों एवं सिद्धांतों पर चलने का विवश किया। इस चुनाव के बाद जो भी सरकार आई उनमें क्षेत्रीय दलों प्रभाव को देखा जा सकता है। पुनः 2011 ईस्वी में विधानसभा चुनाव हुए। इस चुनाव में भी क्षेत्रीय दलों के प्रभाव को देखा जा सकता है झामुमो 17 सीट जीती तो आजसू ने 5 सीटें, भाकपा माले 1 सीट, झारखंड विकास मोर्चा 8 सीट, इस प्रकार क्षेत्रीय दलों ने कुल 43 प्रतिशत सीटों पर विजय हासिल किया।